HANDOUT

पाठ – 12 लखनवी अंदाज (लेखक – यशपाल) MODULE – 1

लखनवी अंदाज एक व्यंग्य रचना है , जिसमें यह स्पष्ट किया गया है की बिना कथ्य के कहानी की रचना नहीं की जा सकती। कहानी के लिए विचार , घटना तथा पात्र होने आवश्यक है। यदि कहानीकार बिना कथ्य के कथा लिख भी दे तो उनकी रचनागत तुष्टि उस लखनवी नवाब जैसी है जो खीरे को खाने के बजाय उसे सूँघकर गंध और कल्पना मात्र से पेट भर जाने की सूचना ऊँची डकार द्वारा देता है। जीवन के असली रूप को छोड़कर बनावटी जीवन शैली अपनाना यथार्थ से दूर भागना है।

लेखक को पास में ही कहीं जाना था। लेखक ने यह सोचकर सेकंड क्लास का टिकट लिया कि उसमें भीड़ कम होती है , वे आराम से खिड़की से प्राकृतिक दृश्य देखते हुए किसी नई कहानी के बारे में सोच सकेगें। पैसेंजर ट्रेन खुलने को थी। लेखक दौड़कर एक डिब्बे में चढ़े परन्तु अनुमान के विपरीत डिब्बा खाली नहीं
मिला। डिब्बे में पहले से ही लखनऊ के नवाबी नस्ल के एक सज्जन पालथी मरे बैठे थे , उनके सामने दो ताजे चिकने खीरे तौलिए पर रखे थे। लेखक का अचानक चढ़ जाना उस सज्जन को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने लेखक से मिलने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। लेखक को लगा शायद नवाब ने सेकंड क्लास का टिकट इसलिए लिया है ताकि वे अकेले यात्रा कर सकें परंतु अब उन्हें यह बिलकुल अच्छा नहीं लग रहा था कि कोई सफ़ेदपोश उन्हें मझले दर्जे में सफ़र करता देखे। उन्होंने शायद खीरा भी अकेले सफ़र में वक्त काटने के लिए ख़रीदा होगा परंतु अब किसी सफ़ेदपोश के सामने खीरा कैसे खाएँ। नवाब साहब खिड़की से बाहर देख रहे थे परंतु लगातार कनखियों से लेखक की ओर भी देख रहे थे।

अचानक ही नवाब साहब ने लेखक को संबोधित करते हुए खीरे का लुत्फ़ उठाने को कहा परन्तु लेखक ने शुक्रिया करते हुए मना कर दिया। नवाब साहब ने बहुत ढंग से खीरे को धोकर छीले , काटे और उसमें जीरा , नमक-मिर्च बुरककर तौलिए पर सजाते हुए पुन: लेखक से खाने को कहा किन्तु वे एक बार मना कर चुके थे इसलिए आत्मसम्मान बनाए रखने के लिए दूसरी बार पेट ख़राब होने का बहाना बनाया। लेखक ने मन ही मन सोचा कि मियाँ रईस बनते हैं लेकिन लोगों की नज़र से बच सकने के ख्याल में अपनी असलियत पर उतर आए हैं। नवाब साहब खीरे की एक फाँक को उठाकर होठों तक ले गए , उसको सूँघा। खीरे के स्वाद के आनंद में उनकी पलकें मुंद गई। मुँह में आए पानी का घूँट गले से
उतर गया , तब नवाब साहब ने फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया।

इसी प्रकार एक-एक करके फाँक को उठाकर सूँघते और फेंकते गए। सभी फाँकों को फेंकने के बाद उन्होंने तौलिए से हाथ और होठों को पोंछा। फिर गर्व से लेखक की ओर देखा और इस नायब इस्तेमाल से थककर लेट गए। लेखक ने सोचा कि इस तरह खीरा इस्तेमाल करने से क्या पेट भर सकता है तभी नवाब साहब ने डकार ली और बोले खीरा होता है लज़ीज पर पेट पर बोझ डाल देता है। यह सुनकर लेखक ने सोचा कि जब खीरे की गंध से पेट भर जाने पर डकार ली जा सकती है तो बिना विचार , घटना और पात्रों की इच्छा मात्र से नई कहानी भी बन सकती है।